

Viran Mahal (Gujarati)

# વીરાન મહલ



શૈબે તરીકત, અમીરે અહલે સુલત, જાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હારતે અલ્લામા મોવાના અબૂ ઝિલાલ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અઘાર કાહિરી રઝવી کاتب تریکاتیم  
المسایحه

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
مَا بَعُدَ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### किताब पढने की दुआ

अज : शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, भानिये दा'वते ईस्लामी हजरते अल्लामा  
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईलयास अतार कादिरि रजवी دامت برکاتهم العالیه  
दीनी किताब या ईस्लामी सबक पढने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ  
लीजिये عَنْ شَاءَ اللَّهُ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ओ अल्लाह ! हम पर ईल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर  
अपनी रहमत नाज़िल करमा ! ओ अज़मत और बुख़र्गी वाले !

(المستطرف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आभिर अेक अेक बार दुइद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना

व बक्रीअ

व मग़िदरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



### वीरान मडल

येह रिसाला (वीरान मडल)

शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, भानिये दा'वते ईस्लामी हजरत  
अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईलयास अतार कादिरि रजवी जियाई  
دامت برکاتهم العالیه ने उर्दू ज़बान में तहरीर करमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी) ने ईस रिसाले को गुजराती रस्मुल  
अत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाअेअ करवाया  
है. ईस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाअें तो मजलिसे तराजिम को  
(ब जरीअअे मक्तूब, ईमेईल या sms) मुत्तलअ करमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन

दरवाजा, अहमदआबाद-1, गुजरात, ईन्डिया

MO. 9898732611 E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

# वीरान महल

शायद नईस रुकावट डाले मगर आप (23 सईडत) का येड रिसाला  
पूरा पढे कर अपनी आभिरत का लला कीजिये.

## दुइए शरीफ़ की इंगीलत

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजरसम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने  
आलीशान है : “जिस ने मुज पर दिन लर में अेक डउर दुइए पाक पढे वोड  
उस वक्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपनी जगड न देभ ले.”

(الترغيب والترهيب ج ٢ ص ٣٢٨ حديث ٢٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

डउरते सख्यिदुना जुनेदे भगदादी اللهُ الْهَادِي भयान इरमाते  
हैं के मेरा अेक बार कूड़ा जना हुवा, वहां अेक सरमाया दार के आलीशान  
महल पर नउर पडी जिस से अैशो तनअूउम भूभ ललक रडा था,  
दरवाजे पर गुलामों का लुरमट था और अेक भुशगुलू कनीज येड नगमा  
अलाप रडी थी :

أَلَا يَا دَارُ لَا يَدْخُلُكَ حُزْنٌ وَلَا يَعْبَثُ بِسَاكِنِكَ الرَّمَانُ

1 : येड भयान अभीरे अडले सुन्नत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आशिकाने रसूल की मदनी  
तहरीक, दा'वते इस्लामी के तीन दिन के बैनल अकवामी सुन्नतों लरे इजतिमाअ (21,  
22, 23 शा'भानुल मुअज़्ज़म 1424 सि.हि. 17-18-19 अक्तूबर 2003 ई. इतवार मुलतान  
शरीफ़) में इरमाया. तरमीभ व इजाके के साथ तहरीरन डउरे भिदमत है.

करमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर अेक बार दुइडे पाक पढा **अल्लाह** उस पर दस  
रहमते भेजता है. (मुसल)

या'नी अै मकान ! तुज में कल्मी गम दाभिल न हो और तेरे अन्हर रहने वालों को जमाना कल्मी ली पामाल न करे.

कुछ असें बा'द मेरा फिर उस मडल से गुजर हुवा तो उस के दरवाजे पर सियाही छा रही थी, नोकर याकर गाँव थे और उस वीरान मडल पर बोसीदगी व शिकस्तगी के आसार नुमायां थे, जमाने डाल मुइरे जमाना के डायों उस की ना पाअेदारी जाडिर कर रही थी, इना के कलम ने उस की दीवारों पर आराईश व जेबाईश की जगड भरबादी व ईभ्रत को ईभारत कर दिया था और अब वहां षुशी व मसरत के बजाअे इना की लै में रन्जे वडशत का नगमा गूंज रहा था ! मैं ने उस मडल की वडशत अंगेज वीरानी के बारे में दरयाइत किया तो मा'लूम हुवा के सरमाया दार भर गया, षुदाम रुपसत हो गअे, भरा घर उजड गया, अजीमुशान मडल वीरान हो गया, जहां डर वक्त लोगों की आमदो रइत से रौनक रहती थी अब वहां सन्नाटा छा गया. डजरते सय्यिदुना जुनैदे बगदादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَلِيمَةِ** इरमाते हैं : मैं ने उस वीरान मडल का दरवाजा षट षटाया तो अेक कनीज की नडीइ (या'नी कभजोर) आवाज आई, मैं ने उस से पूछा : ईस मडल की शानो शौकत और ईस की यमक दमक कहां गई ? ईस की रोशिनयां, ईस के जगमग जगमग करते कुमुके क्या हुअे ? और ईस में बसने वालों पर क्या बीती ? मेरे ईस्तिइसार पर वोड बूढी कनीज अशकबार हो गई और उस ने वीरान मडल की दास्ताने गम निशान सुनाना शुइअ की और कहा : ईस के मकीन (या'नी रहने वाले) आरिजी तौर पर यहां रिडाईश पजीर थे, उन की तकदीर ने उन को कसर (या'नी मडल) से कभ्र में मुन्तकिल कर दिया. ईस वीरान मडल में रहने वाले डर इई षुशडाल और ईस के

**इराने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : उस शापस की नाक आक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुवदे पाक न पढे. (त्रमदी)

सारे अस्बाब व माल को ज्वाल लगे गया, और येह कोई नई बात नहीं, दुन्या का तो येही दस्तूर है के जो भी इस में आता और भुशियों का गन्ज पाता है बिल आभिर वोह मौत का रन्ज पाता और वीरान कब्रिस्तान में पडोंय जाता है, जो इस दुन्या से वफ़ा करता है येह उस के साथ बे वफ़ाई ज़रूर करती है. मैं ने उस कनीज़ से कहा : अक बार मैं यहां से गुजरा था तो इस के अन्दर अक कनीज़ येह नगमा गा रही थी :

أَلَا يَأْدَارُ لَأ يَدْخُلِكَ حُرُنٌّ وَلَا يَعْبَثُ بِسَاكِنِكَ الرَّمَانُ  
या'नी अै मकान ! तुज में कभी गम न दाभिल हो और तेरे अन्दर रहने वालों को जमाना कभी भी पामाल न करे.

वोह कनीज़ बिलक बिलक कर रोने लगी और बोली : वोह भद नसीब गुलूकारा में ही हूं, इस वीरान मडल के मकीनों में से मेरे सिवा अब कोई जिन्दा नहीं रहा. फिर उस ने अक आड़े सर्द दिले पुरदद से भीय कर कहा : अफ़सोस है उस पर जो येह सभ कुछ टेभ कर भी (झानी) दुन्या के धोके में मुप्तला रहते हुअे अपनी मौत से गाड़िल हो जाअे.

(رَوْضُ الرِّيَاحِينِ ج ۱ ص ۲۰۴)

## हंसते बसते घर मौत ने वीरान कर दिये !

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! “वीरान मडल” की छिकायत अपने मकीनों (या'नी इस में रहने वालों) के इना के हाथों मौत के घाट उतरने का कैसा इभ्रत नाक मन्जर पेश कर रही है ! आह ! वोह लोग झानी दुन्या की आसाइशों के बाईस मसज़ुरो शादां, ज्वाल व इना से बे भौड़, मौत के तसव्वुर से बे परवा, लज़्जाते दुन्या में भद मस्त थे. इस दारे ना पाअेदार में यकायक मौत से डम कनार होने के अन्देशे से ना बलद, पुप्ता व उम्दा मकानात की ता'भीरात करने, इन को दीदा जेभ अश्या से

इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर दस मरतबा दुर्रुदे पाक पढे अल्लाह عزوجل उस पर सो रडमते नाजिल इरमाता है. (طبرانی)

मुजय्यन (Decorate) करने में मसरूरुफ़े थे, कब्र के अंधेरों और उस की वदूशतो से बे नियाज जगमग जगमग करती किन्दीलो और कुमकुमों से अपने मकानों को रोशन करने में मशगूल थे, अडलो इयाल की आरिजी उन्सियत, दोस्तों की वक्ती मुसाडभत और ખुदा म की ખुशामदाना ખिदमत के लरम में कब्र की तन्डाई को लूले हुये थे. मगर आह ! इना का बादल यकायक गरज, मौत की आंधी बली और दुन्या में ता देर रहने की उन की उम्मीदें पाक में मिल कर रह गई, उन के मसररतों और शादमानियों से डंसते बसते घर मौत ने वीरान कर दिये, रोशिनियों से जगमगाते कुसूर (या'नी मडल्लात) से धुप अंधेरी कुबूर में उन्हें मुन्तकिल कर दिया गया. आह ! वोड लोग कल तक अडलो इयाल की रौनकों में शादां व मसरूरु थे और आज कुबूर की वदूशतो और तन्डाईयो में मगभूम व रन्जूर हैं.

अजल ने न किरा ही छोडा न दारा इसी से सिकन्दर सा फ़ातेड ली डारा  
डर ईक ले के क्या क्या न डसरत सिधारा पडा रह गया सब यूँही डाड सारा

जगड लु लगाने की दुन्या नहीं है

येड इब्रत की ज़ है तमाशा नहीं है

### काबिले मज्ममत कौन ?

ईस डिकायत के आखिर में कनीज की नसीहत में ली इब्रत के बे शुमार मडनी डूल हैं, मगर अइसोस है उस पर जो दुन्या की नैरंगियां (या'नी इरेब कारियां) देबने के बा वुजूद ली इस के धोके में मुब्तला रहे और मौत से यकसर गाडिल हो जाओ. वाकेई जो दुन्यावी जिन्दगी के धोके में पड कर अपनी मौत और कब्रो डशर को लूल जाओ और अल्लाह पाक को राजी करने के लिये अमल न करे, निडायत ही काबिले मज्ममत है. इस के धोके से बचने की डमें डमारा अल्लाह करीम ખुद तम्भीड इरमा

**इरमाने मुस्तफा** : **عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَتِيدٌ وَالْوَيْسَلَمُ** : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तहकीक वोह भद भप्त हो गया. (अिन सनी)

रहा है. युनाचे पारह 22 सूअे इतिर की आयत 5 में एशदि होता है :

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّكُمْ الْحَيَاةُ  
الدُّنْيَا

तरजमअे कजुल एमान : अै लोगो !  
बेशक अल्लाह का वा'दा सय है तो  
हरगिज तुम्हें धोका न दे दुन्या की  
जिन्दगी.

### भांस का जोंपडा (हिकायत)

भीठे भीठे एस्लामी भाएयो ! यकीनन जो मौत और एस के बा'द वाले मुआमलात से आगाह है वोह दुन्या की रंगीनियों और एस की आसाएशों के धोके में नही पड सकता. हरते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द **عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ** नूह हरमाते हैं : हरते सय्यिदुना ने अेक सादा से भांस के जोंपडे में रिहाएश एप्तियार इरमाए. अर्र की गए : बेहरत था के आप कोए उम्दा मकान ता'मीर इरमा लेते. इरमाया : जिस ने एस दुन्या से यले जाना है उस के लिये येह भी बहुत है.

(तारिख دمشق لابن عساکر ج ٢٢ ص ٢٨٠)

### इानी मकान की सजवटें

अइसोस ! मुसल्मानों की अेक ता'दाह मौत की जानिब अदमे तवज्जोह के सजब आज दुन्या में उम्दा उम्दा मकानात की ता'मीरात में मुन्डमिक (या'नी बे एन्तिहा मसइइ) नजर आ रही है. अपने मकानात को एंग्लिश टाईल बाथ, अमरीकन कियन, मार्बल इ्लोरिंग, वॉर्ड रोब, इल ग्रिल वर्क, इल वुड वर्क, अेक्सट्रा वर्क से तो ખૂब सजया जा रहा है मगर नेकियों के जरीअे अपनी कभ्र की सजवट की तरइ कोए तवज्जोह नही. अेक अरबी शाहर ने किस कहर दई बरे अन्दाज में हमें समजाने की कोशिश की है, मुलाहजा हो :

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुर्रदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (مجمع الزوائد)

رَيَّنْتُ بَيْتَكَ جَاهِلًا وَعَمْرَتَهُ  
وَلَعَلَّ غَيْرَكَ صَاحِبُ الْبَيْتِ  
مَنْ كَانَتْ الْأَيَّامُ سَائِرَةً بِهِ  
فَكَأَنَّه قَدْ حَلَّ بِالْمَوْتِ  
وَالْمَرْءُ مَرْتَهْنٌ بُسُوفَ وَلَيْتَ  
وَهَلَاكُهُ فِي السَّوْفِ وَاللَّيْتِ  
فَلِلَّهِ دُرُّ قَتَى تَدَبَّرَ أَمْرَهُ  
فَقَدَا وَرَاحَ مَبَاوِرَ الْمَوْتِ

अशआर का तरजमा ﴿1﴾ (दुन्या की हकीकत और आभिरत की मा'रिफ़त (या'नी पहचान) से) जहालत की बिना पर तू अपने मकान को जीनत देने और सिर्फ़ इसी को आबाद करने में लगा हुआ है. और (तेरे मरने के बा'द) शायद तेरा गैर इस मकान का मालिक हो ﴿2﴾ जिस को अय्याम (की गाड़ी कब्र की तरफ़) षींयती यली जा रही है वोह गोया मौत से मिल चुका या'नी बहुत जल्द मर जायेगा ﴿3﴾ और आदमी (दुन्यावी मकासिद के हुसूल में) उम्मीद व रज्ज के इन्टे में गिरिफ़तार है जालां के इन ही जूटी उम्मीदों में इस की हलाकत पोशीदा है ﴿4﴾ उस जवान का अज्ज अद्लाह पाक (के जिम्मअे करम) पर है जिस ने अपने (कब्रो आभिरत के) मुआमले की तदबीर की और सुब्हो शाम मौत की तय्यारी करने में जल्दी की.

### बुलन्द मकान ऋमीन जोस कर दिया (हिकायत)

सरकारे दो जहान, हुजूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को उम्दा मकानात से किस कदर बे रज्जती थी इस बात को “अबू द्दावूद शरीफ़” की इस रिवायत से समझने की कोशिश कीजिये ! युनान्ये हजरते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के अेक दिन रसूलुद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कहीं तशरीफ़ ले गये हम त्नी साथ ही थे के ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अेक बुलन्द ईमारत मुलाहज़ा की तो



**इरमाने मुस्तफा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीक न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

इरमाया : येह क्या है ? अर्ज की गई : येह हुलां अन्सारी की है. (येह सुन कर) मदीने के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर, मडबूबे रब्बे अकबर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आमोश हो गमे और येह बात कलमे अत्हर में रभ ली. उता के उस ईमारत का मालिक हाजिर हुआ और उस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को (लोगों की मौजूदगी में) सलाम अर्ज किया, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उस से अ'राज किया, उस (अन्सारी) ने येह अमल कई मरतबा किया यहां तक के उस (अन्सारी) शप्स ने अपने बारे में नाराजी (का) ईजहार) और अ'राज जान लिया तो उस ने जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के अस्हाब से येह कैफ़ियत बयान करते हुअे कहा : **वद्लाह ! मैं रसूलुद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को नाराज पाता हूं.** सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने इरमाया के सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ ले गमे थे तो तुम्हारी ईमारत देभी. (या'नी) हमारा अन्दाजा येही है के तुम से नाराजी का सबब तुम्हारी ता'भीर कर्दा बुलन्द् ईमारत है. येह सुन कर) वोह (अन्सारी) अपनी ईमारत की तरफ़ लौटे और उसे ढा कर जमीन बोस कर दिया. (ابوداؤد ج ٤ ص ٤٦٠ حديث ٥١٣٧ مَخْلُصًا)

## मेरी जिन्दगी का मकसद है हुगूर को मनाना

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! येह है हजराते सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का ईशके रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुफ़रिसिरे शहीर हजराते मुफ़ती अहमद यार भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَان ईस हदीसे पाक के तहत् इरमाते हें : मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें न तो ईमारत ढाने का हुकम दिया और न ही येह इरमाया के ईस तरह की ईमारत बनाना जाईज नहीं, उन सहाबी को सिर्फ़ अन्दाजा ही हुआ के शायद

**करमाने मुस्तफा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीक पढेगा में कियामत के दिन उस की शफाअत कइगा. (جمع الجوامع)

ताजदारे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ईस ईमारत के सभभ मुज से नाराज हो गअे हैं, तो उन का येह जेहन बना, के येह ईमारत मेरे और मडबूब के दरमियान रुकावट बन गई लिहाजा उसे ढा दिया. ईस ढाने में माल को बरबाद करना नहीं और न ही येह कुजूल पर्याई है बल्के अस्ल मकसूद मडबूब को मनाना है, अगर ईमारत ढाने से अल्वाह पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ राजी हो जाअें तो यकीनन यकीनन यकीनन सौदा निहायत ही सस्ता है, जनाभे ખલીલ عَلَيْهِ السَّلَام तो रिजाअे ईलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इरजान्त को जभड करने के लिये तय्यार हो गअे थे. (मिरआत, जि. 7, स. 21 मुलम्भसन) इजरते सय्यिदुना ईस्माईल जभीहुल्वाह عَلَيْهِ السَّلَام عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के जभड से मुतअद्लिक कुरआनी वाकिआ मशहूरों मा'रूफ है. येह उन्हीं इजरत عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ पास था अब कोई प्वाब वगैरा में हुकम पा कर अपनी औलाद को जभड नहीं कर सकता, अगर करेगा तो कातिल और जहन्नम का इकदार ठहरेगा.

नहीं याहता हुकूमत नहीं सस्तनत है पाना

मेरी जिन्दगी का मकसद है हुजूर को मनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

**पुर असरार पथर (हिंकायत)**

इजरते सय्यिदुना अबू उकरिय्या तैभी इरमाते हैं :

“खलीफा सुलैमान बिन अब्दुल मलिक मस्जिद इराम शरीफ में मौजूद था के उस के पास अक पथर लाया गया जिस पर कोई तहरीर कन्दा थी. उस ने जैसे शप्स को बुलाने का कडा जो ईस को पढ सके. युनान्थे मशहूर ताबेई बुजुर्ग इजरते सय्यिदुना वइब बिन मुनब्बेह عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ लाअे और उसे पढा, उस पर लिखा था : “अै ईब्ने आदम ! अगर तू अपनी मौत के करीब होने को जान ले तो लम्बी लम्बी उम्मीदों से कनारा

**करमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा उस ने जन्नत का रास्ता छोड दिया. (طبرانی)

कशी धृष्टियार कर के अपने नेक अमल में ज़ियादती का सामान करे और खिस्र व लालय और दुन्या कमाने की तदबीरें कम कर दे. (याद रख !)  
अगर तेरे कदम फ़िसल गये तो रोजे कियामत तुजे नदामत का सामना डोगा, तेरे अडलो धयाल तुज से बेजार हो जायेंगे और तुजे तकलीफ़ में मुब्तला छोड देंगे, तेरे मां बाप और अजीज व अडबाब भी तुज से जुदा हो जायेंगे, तेरी औलाद और करीबी रिश्तेदार तेरा साथ न देंगे. फिर तू लौट कर दुन्या में आ सकेगा न नेकियों में धंजाफ़ा कर सकेगा. पस उस डस्रतो नदामत की साअत से पहले आभिरत के लिये अमल कर ले.”

वोड है अैशो धशरत का कोध मडल भी जहां तक में डर घडी हो अजल भी  
बस अब अपने धस जडल से तू निकल भी येड जने का अन्दाज अपना बडल भी

जगड ज लगाने की दुन्या नहीं है

येड धधत की जा है तमाशा नहीं है

### अकल मन्द के करने का काम

भीठे भीठे धस्लामी भाधयो ! अकल मन्द को याडिये के वोड अपनी गुजशता जिन्दगी का जायेजा ले, अपने गुनाहों पर नादिम डोकर उन से सख्यी तौबा करे, ज़ियादा देर जिन्दा रहने की उम्मीद के धोके में न पडे बलके कध्रो आभिरत की तय्यारी के लिये डौरन नेक आ'माल में लग जाये, दौलतो माल और अडलो धयाल की मडब्बत में न नेकियां छोडे न गुनाहों में पडे, के धन सब का साथ तो दम त्बर का है और नेकियां कध्रो आभिरत बलके दुन्या में भी काम आयेंगी.

अजीज, अडबाब, साथी, दम के हैं, सब धूट जाते हैं

जहां येड तार टूटा, सारे रिश्ते टूट जाते हैं

**जब किसी दुन्यवी शै से पुशी हासिल हो तो.....**

भीठे भीठे धस्लामी भाधयो ! अैसी डिके आभिरत उसी वक्त

**इरमाने मुस्तफ़ा** : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइदे पाक पढना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाईस है. (ابو يعلى)

डासिल हो सकती है जब के हम मौत को हर वक्त अपनी आंभों के सामने रभें और इस दारे इना (या'नी जत्म हो जाने वाली दुन्या) की इानी अश्या की दिल में कुछ वक़्त (या'नी कद्रो कीमत) ही न समजें, बल्के जब भी इस दुन्या की किसी चीज़ को देख कर ખुशी डसिल हो तो इौरन येड डात डाद करें के येड चीज़ अन्करीब मुजे छोड देगी डा ખुद मुजे इसे छोड कर इाना पड इअेगा.

जब इस बज़्म से उठ गअे दोस्त अकसर और उठते डले इर रहे हैं डराडर येड हर वक्त पेशे नज़र जब है मन्ज़र डडं डर तेरा दिल डडलता है क्यूंकर

जगड इ डगाने की दुन्या नही है

येड इध्रत की इर है तमाशा नही है

### डर रौनक डर देख कर रो पडे (डिकायत)

डज़रते सख़िदुना इधने मुतीअ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ السَّمِيعِ ने अेक दिन अपने डर रौनक डर को देख डर डुश हो गअे डगर इौरन रीना शुइअ कर दिया और इरडर डर : “अै डूड सूरत डकान ! अदलल डे كَرَّجَلْ की कसड ! अगर डौत न डोती तो डैं तुज से डुश डोता और अगर आडर डर तंग कड्र डैं इाना न डोता तो दुन्या और इस की रंगीनियों से डेरी आंभें ठन्डी डोती.” येड इरडर के डर'द इस कदर रोअे के ड्रियकियां डंध गधं.

(اتحاف السّنة للزّيدي ج ١٤ ص ٣٢)

डीठे डीठे इस्लामी ल्मार्थयो ! कडरड व अकल मन्ड वोडी है जो दूसरों को डरता देख कर अपनी डौत डाद करे और कड्रो आडरत की तथ्यारी कर ले. इैसा के डज़रते सख़िदुना इधने डरडीद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरडरते हैं : وَعَظَّ بَغَيْرِهِ : या'नी सआदत मन्ड वोड है जो दूसरों से नसीडत डसिल करे.

(ايضاً)

**करमाने मुस्तफा** صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइद शरीफ न पढे तो वोह लोगों में से कजूस तरीन शप्स है. (مسند احمد)

## दूसरों की मौत का तसव्वुर

गइलत के साथ मौत को याद करने से येह सआदत हासिल नही होगी के इस तरह तो ईन्सान हमेशा जनाजे देखता ही रहता है और कभी कभी मय्यित को अपने हाथों से कब्र में भी उतारता है. **मौत का तसव्वुर** इस तरह कीजिये के तन्हाई में हिल को हर तरह के दुन्यावी भयालात से पाक कर के अपने उन दोस्तों और रिश्तेदारों को याद कीजिये जो वफ़ात पा चुके हैं, तसव्वुर ही तसव्वुर में उन झूत शुद्गान में से बारी बारी हर ओक का येहरा सामने लाईये और उन के हस्बे हाल भयाल कीजिये के वोह किस तरह दुन्या में अपने अपने मन्सब व काम में मशगूल, लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधे दुन्यावी ता'लीम के जरीअे मुस्तफ़िल की बेहतरी के लिये कोशां थे और जैसे कामों की तदबीर में लगे थे जो शायद सालहा साल तक मुकम्मल न हो सकें, दुन्यावी कारोबार के लिये वोह तरह तरह की तकलीफें और मशक्कतें बरदाश्त किया करते थे, वोह सिर्फ़ इस दुन्या ही के लिये कोशिशों में मसइफ़ थे, इसी की आसाईशें उन्हें महबूब और इसी का आराम उन्हें भरगूब था. वोह यूं जिन्दगी गुजार रहे थे गोया उन्हें कभी मरना ही नहीं है, मौत से गाइल, ખुशियों में बढ मस्त और भेल तमाशों में हर दम मगन थे. उन के कफ़न बाजार में आ चुके थे लेकिन वोह इस से बे भबर दुन्या की रंगीनियों में गुम थे. आह ! इसी बे भबरी के आलम में यकायक उन्हें मौत ने आ लिया और वोह अंधेरी कब्रों में उतार दिये गअे. उन के मां बाप गम से निढाल हो गअे, उन की बेवाअें बेहाल हो गईं, उन के बय्ये बिलक्ते रह गअे, मुस्तफ़िल के हसीन प्वाबों का आईना यकना यूर हो गया, उम्मीदें मत्या भेट हो गईं, उन के काम अधूरे रह गअे, दुन्या के लिये उन की सब मेहनतें राअेगां गईं. वुरसा उन के अम्वाल तकसीम कर के मजे से जा रहे हैं और उन को तूल चुके हैं.

करमाने मुस्तफ़ा : عمل الله تعالى عليه وآله وسلم : तुम जहां भी हो मुझ पर दूरद पढो, के तुम्हारा दूरद मुझ तक पहुँचता है. (طبرانی)

## दूसरों की क़ब्र का तसव्वुर

ईस तसव्वुर के बा'द अब उन की क़ब्र के हावात के बारे में गौर कीजिये के उन के बदन कैसे गल सड गये होंगे, आह ! उन के हसीन येहरे कैसे मसूम हो कर बिगड चुके होंगे, वोह जिलजिला कर हंसते थे तो मुंह से झूल जडते थे, मगर आह ! अब उन के वोह यमकीले भूब सूरत हांत जड चुके होंगे और मुंह में पीप पड गई होगी, उन की मोटी मोटी हिलकश आंभें उबल कर रुप्सारों पर बह गई होंगी, संवार संवार कर रभे हुअे उन के रेशम जैसे बाल जड कर क़ब्र में बिपर गये होंगे, उन की बारीक ठिंथी भूब सूरत नाक में कीडे घुसे हुअे होंगे, उन के गुलाब की पंजडियों की मानिन्द पतले पतले नाज़ुक हांठों को कीडे जा रहे होंगे. वोह नन्हे नन्हे बय्ये जिन की तुतली हातों से गमजदा हिल जिल उठते थे क़ब्र में उन की जवानों पर कीडे चिमटे होंगे, नौ जवानों के काबिले रशक तुवाना, वरजिशी जिस्म जाक में मिल गये होंगे, उन के तमाम जोड अलग अलग हो चुके होंगे.

**अपनी सकरात, मौत, गुस्ल व क़ईन,**

**जनाजा व क़ब्र का दर्दनाक तसव्वुर**

येह "तसव्वुर" करने के बा'द येह सोचिये के आह ! येही हाल अन्करीब मेरा भी होने वाला है, मुझ पर भी नज़्म (सकरात) की कैफ़ियत तारी होगी, हाअे ! नज़्म की सप्तियां !! मौत का अेक जटका तलवार के हज़ार वार से सप्त होगा !!! आंभें छत पर लगी होंगी, अज़ीज़ो अकारिब जम्म होंगे, मां "मेरा लाल, मेरा लाल" कड रडी होगी, बाप मुझे "बेटा बेटा" कड कर पुकार रहा होगा, बहनं "भय्या भय्या" की सदाअें लगा रडी होंगी. याहने वाले आहें और सिस्कियां



**इरमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुर्रदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (جمع الجوامع)

## मौत की याद दिलाने वाले अश्आर

क़ब्र रोज़ाना येद करती है पुकार  
याद रभ में हूँ अंधेरी कोठड़ी  
मेरे अन्दर तू अकेला आयेगा  
नर्म बिस्तर घर पे ही रह जायेंगे  
धुप अंधेरी क़ब्र में जब जायेगा  
काम मालो ज़र नहीं कुछ आयेगा  
जब तेरे साथी तुजे छोड आयेंगे  
क़ब्र में तेरा कफ़न इट जायेगा  
तेरा एक एक बाल तक ज़ड जायेगा  
आह ! उबल कर आंभ ली बह जायेगी  
सांप बिस्त्रू क़ब्र में गर आ गये !

मुजे में हूँ कीडे मकोडे बे शुमार  
तुज को डोगी मुज में सुन वदशत बडी  
हां मगर आ'माल लेता आयेगा  
तुज को इशें भाक पर दफ़नायेंगे  
बे अमल ! बे धन्तिहा धबरायेगा  
गाइल धन्सां याद रभ पछतायेगा  
क़ब्र में कीडे तुजे पा जायेंगे  
याद रभ नाज़ुक बदन इट जायेगा  
पूब सूरत जिस्म सब सड जायेगा  
पाल उधड कर क़ब्र में रह जायेगी  
क्या करेगा बे अमल गर छा गये !

(वसाएले बफ़िशश (मुरम्मम), स. 711, 712)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## रोते रोते हियकियां बंधी हुई थीं (हिकायत)

भीठे भीठे इस्लामी त्माइयो ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَتُهُمُ اللهُ الْمُبِينِ

मौत व क़ब्रो आबिरत को पेशे नज़र रभा करते थे, येही वजह है के वोह गुनाहों से मुजतनिब (या'नी दूर) और नेकियों पर मुस्तईद (या'नी तय्यार) रहते और इस दारे इना की आरिजी लज़्जतों में मुन्डमिक डो कर मुत्मईन डो जाने के बजाये भौके फुदा से गिर्या कनां रहते. युनान्चे हज़रते सय्यिदुना यजीद रक्काशी رَحْمَةُ اللهِ الشَّافِي इरमाते हूँ के हम हज़रते आमिर बिन अब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के पास डाज़िर हुये. **रोते रोते उन की हियकियां बंधी हुई थीं**, हम ने सबबे गिर्या दरयाइत किया तो इरमाने लगे : मुजे उस (तवील तरीन) रात का भौक रुला रहा है जिस की सुब्द यौमे कियामत है, या'नी क़ब्र की रात जूँ ही अत्म डोगी कियामत का दिन शुर्अ डो जायेगा लिडाजा इस के डोशरुभा तसव्वुर ने तडपा रभा है. (الْمَجْلَسَةُ ١٤ ص ١٩٩)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुअ पर दुरद शरीफ़ पढो, अब्बाद عُزْرُبَلْ तुम पर रडमत भेजेगा.

(ابن عدی)

## मौत की याद क्यूं जरूरी है !

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! कब्रो उशर के अइवाल को सामने रभ कर हमारे बुजुर्गानि दीन رَحْمَهُمُ اللهُ الْمُبِينِ डमें ली मौत की याद और ईस की आमद से कबल ईस की तय्यारी की तरगीभ दिलाते हैं. युनान्ये डुजुतुल ईस्लाम डजरते सय्यिदुना ईमाम मुडम्मद बिन मुडम्मद बिन मुडम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي इरमाते हैं : वोड शप्स, के जिस को मौत से शिकस्त खानी डो मिट्टी जिस का बिछोना, कीडे जिस के अनीस (या'नी साथी), मुन्कर नकीर जिस के मुम्तलिन (या'नी ईम्तिहान लेने वाले), कब्र जिस का ठिकाना, जमीन का पेट जिस की क्रियाम गाल, क्रियामत जिस की वा'दा गाल और जन्नत या जहन्नम जिस का मौरिद (या'नी पछोयने की जगड) डो उसे सिर्फ़ मौत ही की क्कि डोनी याडिये वोड सिर्फ़ ईसी का क्कि करे, ईसी के लिये तय्यारी करे, ईसी की तदबीर करे, ईसी का मुन्तजिर रहे और डक येड है के अपने आप को कौत शुदा लोगो में शुमार करे और खुद को मरा डुवा तसप्पुर करे, क्यूंके, जो यीज आ कर रहेगी वोड करीभ ही है.

(احیاء القلوب ०८ ص ११)

नबियों के सरदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ईब्रत निशान है : “अकल मन्द वोड है जो अपने नफ़स का मुडासबा करे और मौत के बा'द के मुआमलात के लिये तय्यारी करे.”

(त्रुमयी ६८ व २०७ हडिथ २६१७)

## मिठाज पुर्सी पर गशी

बुजुर्गानि दीन رَحْمَهُمُ اللهُ الْمُبِينِ मौत और ईस दुन्या से क्यू करे जाने को बहुत कसरत से याद करते बडके बसा अवकात उन पर मौत और कब्रो उशर की ईस क्कि व भौफ़ का औसा गलबा डोता के उन पर बेडोशी तारी डो जाती. युनान्ये डजरते सय्यिदुना यजीद रक़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الشّافِي (से जब कोई अर्ज करता : क्या डाल है ? तो) इरमाया करते : मौत जिस का

इरमाने मुस्तफ़ा : عَلِيٌّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरद दे पाक पढे बेशक तुम्हारा मुज पर दुरद दे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मर्कुरत है. (ابن عساکر)

मौईद (या'नी वा'दे का वक्त), जमीन के नीचे जिस का ठिकाना, कब्र जिस का घर, कीडे जिस के अनिस (या'नी साथी) हों और ईसी के साथ साथ उसे अल इजउल अकबर (बडी घबराहट या'नी डियामत) का ली इन्तिजार हो, उस का हाल क्या होगा ? येह इरमा कर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ पर रिक्त तारी हो जाती हत्ता के रोते रोते बेडोश हो जाते. (المستطرف ج ٢ ص ٤٧٧)

### सुब्ह किस हाल में की ? (हिकायत)

ईसी तरह हजरते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار से किसी ने पूछा : आप ने सुब्ह कैसे की ? इरमाया : उस शप्स की सुब्ह किस हाल में होगी जो अक घर (या'नी दुन्या) से दूसरे घर (या'नी आभिरत) की तरफ जाने वाला हो और कुछ पता न हो, के जन्त में जाना है या दोजभ ठिकाना है. (تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ص ٣٠٦)

भीडे भीडे ईस्लामी लार्थयो ! हमें ली याहिये के बुजुगाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُبِيْن की मुबारक मदनी इक से इकतिसाबे इक करते हुअे मौत और आभिरत की तय्यारी का जेहन बनाअें और ईस बे सबात (या'नी कमजोर), आरिजी और इनी दुन्या पर अे'तिमाद व इत्मीनान के बजाअे आभिरत की तय्यारी में मशगूल रहें.

### आबाद मकान वीरान हो जअेंगे

अभीरुल मुअभिनीन हजरते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْغَفَّار ने अपने अक पुत्रे में ईशाद इरमाया : अै लोगो ! दुन्या तुम्हारा बाकी रहने वाला ठिकाना नहीं है, येह तो वोह दारे ना पाअेदार है जिस के लिये अल्हाड पाक ने इना होना और ईस के रहने वालों पर यहां से रुप्त हो जाना लिख दिया है. अन्करीब मजबूत और आबाद मकान टूट इट कर वीरान हो जअेंगे, और इन मकानात के कितने डी अैसे मकीन (या'नी रहने वाले) हैं जिन पर रशक डिया जाता है ब उजलत

**फरमाने मुस्तफा** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बप्शिश की दुआ) करते रहेंगे. (طبرانی)

तमाम (या'नी जल्द तर) रुफ़सत हो जायेंगे. पस अै लोगो ! अद्लाह पाक तुम पर रहुम फ़रमाये ईस (दुन्या) में से उम्दा यीज़ (या'नी नेकियां) ले कर अख़्छे डाल में निकलो और तोशअे सफ़र ले लो. पस बेहतरीन तोशा तकवा व परहेज़ गारी है. (احیاء العلوم ج ۵ ص ۲۰۱)

## दुन्या भरबाह हो कर रहेगी !

करोड़ों शाफ़ि'य्यों के अजीम पेशवा डउरते सय्यिदुना ईमामे शाफ़े'ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ ने अेक शप्स को नसीहत करते हुअे ईशा'द फ़रमाया : “बेशक दुन्या फ़िसलने की जगह और ज़िल्लत का घर है, ईस की आबादी भरबाह होने वाली और ईस के साकिनीन या'नी आशिन्दे कब्रों में पड़ोयने वाले हैं, ईस से ज़े कुछ जम्म किया है वोह डर सूरत ईस से जुदा होना है और ईस की दौलत मन्दी, तंगदस्ती में बढलने वाली है, ईस में ज़ियादती डकीकत में तंगी है और ईस में तंगी दर अस्ल आसानी है. पस, अद्लाह पाक की बारगाह में घबरा कर तौबा कर और उस के अता कर्दा रिज़ूक पर राज़ी रह, दारे बका (या'नी आभिरत) के अज को दारे फ़ना (या'नी दुन्या) के बढले में ज़अेअ न कर, तेरी ज़िन्दगी ढलता साया और गिरती दीवार है, अपने अमल में ज़ियादती और अमल (या'नी दुन्यावी उम्मीद) में कमी कर.” (مناقبُ الشّافعی للبيهقی ج ۲ ص ۱۷۸)

## आज अमल का मौक़अ है !

डउरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे षुदा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ने अेक भरतबा कूड़े में षुत्बा देते हुअे ईशा'द फ़रमाया : “बेशक तुम्हारे बारे में मुजे ईस बात का षौफ़ है के कहीं तुम लम्बी लम्बी उम्मीदें न बांध बैढो और ष्वाहिशात की पैरवी में न लग जाओ, याद रषो ! लम्बी उम्मीदें आभिरत को षुला देती हैं, और षबरदार ! नफ़्सानी ष्वाहिशात

**इरमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अक दिन में 50 बार दुरुदे पाक पढे क्रियामत के दिन में उस से मुसा-फ़डा कर्इ (या'नी हाथ मिलाउ)गा. (ابن بشكوال)

की पैरवी राडे हक से भटका देती है, भबरदार ! दुन्या अन्करीभ पीठ फ़ैरने वाली और आभिरत जल्ल आने वाली है, आज अमल का दिन है हिसाभ का नहीं और कल हिसाभ का दिन होगा, अमल का नहीं.” (إيضاً ص ०८)

### दुन्या आभिरत की तय्यारी के लिये मजूस है

डरते सय्यिदुना उस्माने गनी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने सब से आभिरी भुतबा जो एशरद इरमाया उस में येह ली है : “अल्लाह पाक ने तुम्हें दुन्या महुज एस लिये अता इरमाई है के तुम एस के जरीअे आभिरत की तय्यारी करो, एस लिये अता नहीं इरमाई के तुम एसी के डो कर रह जाओ, बेशक दुन्या महुज फ़ानी और आभिरत बाकी है. तुम्हें फ़ानी (दुन्या) कहीं भडका कर बाकी (आभिरत) से गाफ़िल न कर दे, फ़ना डो जाने वाली दुन्या को बाकी रहने वाली आभिरत पर तरजुह न दो क्यूंके दुन्या का रिश्ता कत्अ डोने वाला है और बेशक अल्लाह पाक की तरफ़ लौटना है. अल्लाह पाक से डरो क्यूंके उस का डर उस के अजाभ के लिये (रोक और) ढाल और अल्लाह पाक तक पडोयने का जरीआ है.”<sup>1</sup>

है येह दुन्या भे वफ़ा आभिर फ़ना यल दिये दुन्या से सब शाडो गदा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! भयान के आभिर में सुन्नत की इज़ीलत और यन्द सुन्नतें और आदाभ भयान करने की सआदत हासिल करता हूं. इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “जिस ने मेरी सुन्नत से महुभत की उस ने मुज से महुभत की और जिस ने मुज से महुभत की वोह जन्नत में मेरे साथ डोगा.”

(ابن عساکر ج १ ص ३६३)

دينه

لشأنق الشافعي للبيهقي ج २ ص १७८ -

**इराने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : अरोजे डियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोह लोग जिस ने हुन्या में मुज पर जियादा दुवुदे पाक पढे होंगे. (ترمذی)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका

जन्नत में पडोसी मुजे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“सफ़ेद कफ़न में कफ़नाओ” के सोलह दुइइ की

निश्चत से कफ़न के 16 मदनी इल

﴿1﴾ “जो मय्यित को कफ़न दे तो उस के लिये मय्यित के हर बाल के बदले में अेक नेकी है.”<sup>1</sup> हजरते अब्दलामा अब्दुर्रिफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي हदीसे पाक के इस हिससे “जो मय्यित को कफ़न दे” के तइत इरमाते हैं : या’नी “जिस ने अपने माल से मय्यित के कफ़न का इन्तिजाम किया”<sup>2</sup> ﴿2﴾ जो मय्यित को कफ़न दे अब्लाह पाक उसे जन्नत के बारीक और मोटे रेशम का लिबास पहनायेगा<sup>3</sup> ﴿3﴾ “जो किसी मय्यित को नहलाये, कफ़न दे, पुशबू लगाये, जनाजा उठाये, नमाज पढे और जो नाकिस बात नजर आये उसे छुपाये वोह अपने गुनाहों से औसा पाक हो जाता है जैसा जिस दिन मां के पेट से पैदा हुवा था.”<sup>4</sup> इस हिससे हदीस “नाकिस बात” से मुराद येह है के : “जो बात जाहिर करने के काबिल न हो जैसे येहरे का रंग सियाह हो जाना” ﴿4﴾ अपने मुर्दों को अख़ा कफ़न दो क्यूंके वोह अपनी कब्रों में आपस में मुलाकात करते और (अख़े कफ़न से) तफ़ापुर करते (या’नी पुश छोते) हैं<sup>5</sup> ﴿5﴾ जब तुम में से कोई अपने भाई को कफ़न दे, तो उसे अख़ा कफ़न दे<sup>6</sup> ﴿6﴾ अपने मुर्दों को सफ़ेद कफ़न में कफ़नाओ.<sup>7</sup>

कफ़न पहनाने की निश्चत

﴿कफ़न पहनाने की निश्चत : रिजाये इलाही पाने और सवाबे आभिरत दिनेह﴾

ل: تاريخ بغداد ج ٤ ص ٢٦٣ ل: التيسير ج ٢ ص ٤٤٢ - ل: المستدرک ج ١ ص ٦٩٠ حديث ١٣٨٠ - ل: ابن ماجه ج ٢

ص ٢٠١ حديث ١٤٦٢ - ل: الفردوس ج ١ ص ٩٨ حديث ٣١٧ - ل: مسلم ج ٤ ص ٤٧٠ حديث ٩٤٣ - ل: ترمذی ج ٢ ص ٣٠١ حديث ٩٦٦ -

**इरमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अेक मर्तबा दुरद पढा **अल्लाह** उस पर दस रडमते भेजता और उस के नामअे आ'माल में दस नेकियां लिखता है. (त्रमुत्)

कमाने के लिये अपनी मौत के बा'द फुद को पहनाअे जाने वाले कफ़न को याद करते हुअे अदाअे इर्ज के लिये मय्यित को सुन्नत के मुताबिक कफ़न पहनाओंगा ❀ मय्यित को कफ़न देना "इर्जे किफ़ाया" है<sup>1</sup> या'नी किसी अेक के देने से सभ भरियुज्जिम्मा हो गअे (या'नी सभ के सर से इर्ज उतर गया) वरना जिन जिन को ખबर पडोंची थी और कफ़न न दिया वोह सभ गुनाहगार होंगे.

### मर्द का मरनूण कफ़न

❀ (1) लिफ़ाफ़ा या'नी यादर (2) धंजार या'नी तडबन्द (3) कमीस या'नी कफ़नी. औरत के लिये धंन तीन के साथ साथ मजीद दो येह हें : (4) ओढनी (5) सीनाबन्द. (۱۷۰۱۷۵) ❀ जो ना बालिग हदे शह्वत<sup>2</sup> को पहोंय गया वोह बालिग के हुकूम में है या'नी बालिग को कफ़न में जितने कपडे दिये जाते हें एसे ली दिये जाअें और एस से छोटे लडके को अेक कपडा और छोटी लडकी को दो कपडे दे सकते हें और लडके को ली दो कपडे दिये जाअें तो अख़ा है और बेहतर येह है के दोनों को पूरा कफ़न दे अगर्ये अेक दिन का बय्या हो. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 819) ❀ सिर्ई उलमा व मशाएँभ को बा एमामा दफ़न किया जा सकता है, आम लोगों की मय्यित को मअ एमामा दफ़नाना मन्अ है. (मदनी वसियत नामा, स. 4) ❀ मर्द के बदन पर अैसी फुशू लगाना जाँठ नही जिस में जा'फ़रान की आभेजिश हो औरत के लिये जाँठ है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 821) जिस ने अेहराम बांधा (और एसी डालत में वफ़ात पाई) है उस के बदन पर ली फुशू लगाअें और उस का मुंह और सर कफ़न से ढुपाया जाअे. (अैजान)

<sup>1</sup> : बहारे शरीअत, जि. 1, स. 817. <sup>2</sup> : हदे शह्वत लडकों में येह के उस का हिल औरतों की तरफ़ रगबत करे और लडकी में येह के उसे देभ कर मर्द को उस की तरफ़ मैलान (या'नी ज्वाडिश) पैदा हो और एस का अन्दाजा लडकों में बारह साल और लडकियों में नव बरस है. (डाशियअे बहारे शरीअत, जि. 1, स. 819)

**करमाने मुस्तफा** صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : शबे जुमुआ और रोजे जुमुआ मुज पर दुइद की कसरत कर लिया करो जो असा करेगा कियामत के दिन में उस का शफीअ व गवाह बनूंगा. (شعب الایمان)

## कड़न की तइसील

❶ **लिफ़ाफ़ा** (या'नी यादर) : या'नी मय्यित के कद से ँतनी बडी ढो, के ढोनों तरफ़ बांध सकें  
 ❷ **ँज्जर** (या'नी तहबन्द) : योटी (या'नी सर के शुइअ) से कदम तक या'नी लिफ़ाफ़े से ँतना छोटो जो बन्दिश के लिये जाँध था  
 ❸ **कमीस** (या'नी कड़नी) : गरदन से घुटनों के नीचे तक और येह आगे और पीछे ढोनों तरफ़ बराबर ढो ँस में याक और आस्तीनें न ढों. मर्द व औरत की कड़नी में इर्क है, मर्द की कड़नी कन्धों पर यीरें और औरत के लिये सीने की तरफ़  
 ❹ **ओढनी** : तीन ढाथ या'नी डेढ गज की ढोनी याहिये  
 ❺ **सीनाबन्द** : पिस्तान से नाइ तक और बेहतरे येह है के रान तक ढो. (मुलम्पस अज बढारे शरीअत, जि. 1, स. 818) उभूमन तय्यार कड़न भरीद लिया जाता है ँस का मय्यित के कद के मुताबिक मरनून साँठज का ढोना जइरी नही, येह ली ढो सकता है के ँतना जियादा ढो, के ँसराइ में दामिल ढो जाओ, लिढाजा अेहतियात ँसी में है के थान में से हस्बे जइरत कपडा काटा जाओ ❻ कड़न अस्थो ढोना याहिये या'नी मर्द ँटैन व जुमुआ के लिये जैसे कपडे पहनता था और औरत जैसे कपडे पहन कर मयके जाती थी उस कीमत का ढोना याहिये. (बढारे शरीअत, जि. 1, स. 818)

## कड़न पहनाने का तरीका

❶ गुस्ल ढेने के बा'द आहिसता से बदन किसी पाक कपडे से पोंछ लीजिये ताके कड़न तर न ढो, कड़न को अेक या तीन या पांच या सात बार धूनी दीजिये, ँस से जियादा नही, फिर ँस तरह बिछाँये के पहले लिफ़ाफ़ा या'नी बडी यादर ँस पर तहबन्द और ँस के ङिपर कड़नी रभिये, अब मय्यित को ँस पर लिटाँये और कड़नी पहनाँये, अब सर, दाढी (और दाढी न ढो तो ढोडी) और बकिय्या तमाम जिस्म पर फुशबू मलिये, वोड आ'जा जिन पर सज्दा किया जाता है या'नी पेशानी, नाक, ढाथों, घुटनों और कदमों पर काइूर लगाँये. फिर ँज्जर या'नी तहबन्द लपेटिये,

**करमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अक बार दुरद पढता है **अदवाउ** उस के लिये अक कीरात अज्र लिभता है और कीरात उहुद पडाउ जितना है. (عبدالرزاق)

पडले बाई या'नी उलटी जानिब से फिर सीधी जानिब से. फिर लिफ़ाई। भी ईसी तरह पडले बाई या'नी उलटी जानिब से फिर सीधी जानिब से लपेटिये ताके सीधा ओपर रहे. सर और पाउं की तरफ़ बांध दीजिये के उउने का अन्देशा न रहे. औरत को “कङनी” पडना कर उस के बाल दो छिस्से कर के कङनी के ओपर सीने पर डाल दीजिये और ओढनी आधी पीठ के नीचे से बिछा कर सर पर ला कर मुंड पर निकाब की तरह डाल दीजिये के सीने पर रहे, के उस का तूल (या'नी लम्बाई) आधी पीठ से सीने तक है और अर्ज (या'नी चौडाई) अक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक है फिर ब दस्तूर ईजार व लिफ़ाई लपेटिये फिर सब के ओपर सीनाबन्द पिस्तान के ओपर से रान तक ला कर बांधिये. (मजीद तफ़सीलात के लिये बडारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 817 ता 822 का मुतालआ इरमाईये)

सुन्नतें सीभने के लिये मक्तबतुल मदीना की दो किताबें (1) 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “बडारे शरीअत” हिस्सा 16 और (2) 120 सफ़हात की किताब “सुन्नतें और आदाब” उदिय्यतन हासिल कीजिये और पढिये. सुन्नतों की तरबियत का अक बेहतरीन जरीआ दा'वते ईस्लामी के मदननी काङ्किलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है.

वूटने रहमतें काङ्किले में यलो सीभने सुन्नतें काङ्किले में यलो  
 डोंगी डल मुश्किलें काङ्किले में यलो अत्म डों शामतें काङ्किले में यलो  
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى الْحَبِيبِ!

येह रिसाला पढ लेने के  
 भा'द सवाब की निर्यत  
 से किस्ती को हे दीजिये

गमे मदीना, बकीअ,  
 मक्किरत और बे हिसाब  
 जन्नतुल फिरदौस में आका  
 के पडोस का तालिब



30 रबीउल आभिर 1439 सि.हि.

18-1-2018



करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुर्दे पढो तो मुज पर भी पढो, बेशक मैं तमाम ज़हानों के रब का रसूल हूँ. (جمع الجوامع)

ફેહરિસ

ઉન્વાન	સંક્રા	ઉન્વાન	સંક્રા
હંસતે બસતે ઘર મૌત ને વીરાન કર દિયે !	3	અપની સકરાત, મૌત, ગુસ્લ વ કફન,	
કાબિલે મઝમ્મત કૌન ?	4	જનાઝા વ કબ્ર કા દર્દનાક તસવ્વુર	12
બાંસ કા ઝોંપડા (હિકાયત)	5	મૌત કી યાદ દિલાને વાલે અશ્આર	14
ફાની મકાન કી સજાવટે	5	રોતે રોતે હિચકિયાં બંધી હુઈ થી (હિકાયત)	14
બુલન્દ મકાન ઝમીન બોસ		મૌત કી યાદ ક્યૂં ઝરૂરી હે !	15
કર દિયા (હિકાયત)	6	મિઝાજ પુર્સી પર ગશી	15
મેરી ઝિન્દગી કા મક્સદ હૈ હુઝૂર કો મનાના	7	સુબહ કિસ હાલ મેં કી? (હિકાયત)	16
પુર અસરાર પથ્થર (હિકાયત)	8	આબાદ મકાન વીરાન હો જાએંગે	16
અકલ મન્દ કે કરને કા કામ	9	દુન્યા બરબાદ હો કર રહેગી !	17
જબ કિસી દુન્યવી શૈ સે		આજ અમલ કા મૌકઅ હે !	17
પુશી હાસિલ હો તો.....	9	દુન્યા આખિરત કી તય્યારી કે લિયે	
બા રૌનક ઘર દેખ કર રો પડે (હિકાયત)	10	મખસૂસ હે	18
દૂસરોં કી મૌત કા તસવ્વુર	11	કફન કે 16 મદની ફૂલ	19
દૂસરોં કી કબ્ર કા તસવ્વુર	12	મઆખિઝો મરાજેઅ	23

مآخذ و مراجع

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
دار التراث قاہرہ	مناقب الشافعی	دار ابن حزم بیروت	قران پاک
دار الفکر بیروت	روض الرباعین	دار احیاء التراث العربی بیروت	مسلم
دار الکتب العربی بیروت	حنبیة الغافلین	دار الفکر بیروت	ابوداؤد
دار الکتب العلمیة بیروت	المجالسة	دار المعرفه بیروت	ترمذی
دار الکتب العلمیة بیروت	ذم الهوی	دار المعرفه بیروت	ابن ماجہ
دار صادر بیروت	احیاء العلوم	دار الکتب العلمیة بیروت	المستدرک
دار الکتب العلمیة بیروت	اتحاف السادة	دار الکتب العلمیة بیروت	القرودس
دار الکتب العلمیة بیروت	مستطرف	دار الکتب العلمیة بیروت	الترغیب والترہیب
دار الفکر بیروت	عالمگیری	دار الکتب العلمیة بیروت	التیسیر
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	فضیاء القرآن کتب خانہ مرکز الادبیات لاہور	مرآة
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	مدنی وصییت نامہ	دار الکتب العلمیة بیروت	تاریخ بغداد
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	وسائل بخشش	دار الفکر بیروت	تاریخ دمشق

## નેક નમાઝી બનને કે લિયે

હર જુમે રાત બા'દ નમાઝે મગરિબ આપ કે યહાં હોને વાલે દા'વતે ઈસ્લામી કે હફતાવાર સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઅ મેં રિઝાએ ઈલાહી કે લિયે અચ્છી અચ્છી નિયતોં કે સાથ સારી રાત શિર્કત ફરમાઈયે ☪ સુન્નતોં કી તરબિયત કે લિયે મદની કાફિલે મેં આશિકાને રસૂલ કે સાથ હર માહ ત્રીન દિન સફર ઔર ☪ રોઝાના "ફિકે મદીના" કે ઝરીએ મદની ઈઆમાત કા રિસાલા પુર કર કે હર મદની માહ કી પહલી તારીખ અપને યહાં કે ઝિમ્મેદાર કો જમ્અ કરવાને કા મા'બૂલ બના લીજિયે.

**મેરા મદની મકસદ :** "મુઝે અપની ઔર સારી દુન્યા કે લોગોં કી ઈસ્લાહ કી કોશિશ કરની છે. ﷻ" અપની ઈસ્લાહ કે લિયે "મદની ઈઆમાત" પર અમલ ઔર સારી દુન્યા કે લોગોં કી ઈસ્લાહ કી કોશિશ કે લિયે "મદની કાફિલોં" મેં સફર કરના છે. ﷻ



M.R.P.  
₹ 14



### મક્તબતુલ મદીના કી શાખેં

અહમદઆબાદ : ફેઝાને મદીના ત્રી કોનિયા બગીચે કે પાસ, મિરઝાપૂર. મો. 0919327168200

મોડાસા : ફેઝાને મદીના, બાગે હિદાયત સોસાયટી, કોલેજ રોડ મો. 9725824820

ભરૂચ : ફેઝાને મદીના, મેમણ કોલોની, બુન્યાદ નગર, ડૂંગરી શેરપૂરા રોડ મો. 9327522145

સુરત : વલિયા ભાઈ મસ્જિદ, ખ્વાજા દાના દરગાહ કે પાસ. મો. 9377869225

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net